राजन की चिंताएं

असगर वजाहत की पांच कहानियां

राजन- राजगुरु हम बहुत परेशान हैं।
राजगुरु- क्यों राजन?
राजन- हत्याएँ बहुत हो रही हैं।
राजगुरु- राजन क्या आप चाहते हैं कि हत्याएँ न हों?
राजन- नहीं राजगुरु।
राजगुरु - फिर क्या चाहते हैं राजन?
राजन - हत्याओं की चर्चा न हो।

.....

- राजगुरु हम बहुत परेशान हैं
- क्यों राजन क्या बात है
- हमारे राज्य में बेरोजगारी बहुत बढ़ गई
- तो क्या राजन चाहते हैं बेरोजगारी खत्म हो जाए
- नहीं, हम नहीं चाहते हैं
- तो राजन क्या चाहते हैं?
- बेरोजगारी की चर्चा न हो

.....

- हम बहुत परेशान हैं राजगुरु
- क्यों राजन क्या बात है
- राज में महंगाई बहुत बढ़ गई है ।राज के साहूकार बड़ा मुनाफा कमा रहे है
- तो राजन आप चाहते हैं कि साहूकार बड़ा मुनाफा न कमाएं?
- नहीं राजगुरु हम चाहते हैं कि साहूकार बड़ा मुनाफा कमाएं।
- हे राजन फिर समस्या क्या है?
- समस्या यह है कि लोग इसे समझ रहे हैं

.....

- राजगुरु हम इतिहास में अमर हो जाना चाहते हैं
- वे तो आप हो ही गए हैं राजन
- हमें लगता है अभी इतिहास में हमें जगह नहीं मिली है
- क्यों राजन ऐसा क्यों लगता है
- इतिहास में भीड़ बहुत है। सारी जगहें भर गई हैं ।कोई सीट खाली नहीं है।
- एक रास्ता है राजन
- क्या
- इतिहास में जो लोग जमे बैठे हैं उन्हें वहां से हटाया जाए
- पर यह कैसे किया जाएगा राजगुरु
- यह तो बहुत सरल काम है राजन
- कैसे
- हमें कुछ चोरों की आवश्यकता पड़ेगी राजन
- चोरों की? चोर क्या करेंगे
- चोर ही सब कुछ करेंगे राजन
- क्या
- इतिहास में जो जमे बैठे हैं उनकी कोई प्रिय चीज लेकर कोई चोर भागेगा
- क्या चीज
- जैसे चश्मा या चरखा या वास्कट या चू ?ीदार पैजामा....चोर लेकर भागेगा
- तो उससे क्या होगा
- निश्चित रुप से वे चोर का पीछा करेंगे
- फिर?
- फिर उनकी कुर्सियां खाली हो जाएगीं जिन पर आप आराम से बैठ जायेगें।

.....

- हमें कुछ शब्द पसंद नहीं है राजगुरु
- कौन से शब्द राजन
- गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, विरोध, शिक्षा, ये शब्द हमें बिल्कुल पसंद नहीं हैं इनका क्या किया जाना चाहिए ?
- मेरे विचार से इनकी हत्या कर देना चाहिए
- बहुत सही कह रहे हो राजगुरु लेकिन कैसे?
- मैं एक - एक शब्द को पकड़कर लाता हूं। आप उसे गोली मारते चले जाइये।
- हां ठीक है सबसे पहले गरीबी को लाओ

गरीबी को गोली मार दी गई। बेरोजगारी को गोली मार दी गई ।विरोध को भी गोली मार दी गई। गोली मारते मारते राजन का निशाना चूक गया। एक गोली राजगुरु को लगी। राजगुरु मर गए और जिन शब्दों की हत्या की गई थी वे सभी जीवित हो गए।

मैं जानता हूँ आपको बहुत बुरा लगता है

जब कोई आपसे कहता है कि इस देश में रहने वाला कोई भारत माता की जय नहीं बोलना चाहता। मानता हूँ कि आपका खून खौल जाता है।

मैं भी पूरी जवानी भारत माता की जय के नारे लगाता रहा

आज भी लगा सकता हूँ उसमें कोई बुराई नहीं है। लेकिन अब नहीं लगाता। मैं अब जान बूझ कर भारत माता की जय बोलने से मना करता हूँ।

क्यों करूँगा मैं ऐसा ?
यह मत कहना कि मैं कम्युनिस्ट हूँ
या मैं विदेशी पैसा खाता हूँ
या मैं नक्सलवादी हूँ

या मैं मुसलमानों के तलवे चाटता हूँ।

मेरा जन्म एक सवर्ण हिंदू परिवार में हुआ। मुझे भी बताया गया कि हिंदू धर्म दुनिया का सबसे महान धर्म है। मुझे भी बताया गया कि हमारी जाति बहुत ऊंची है। मुझे भी बताया गया कि देश की एक खास राजनैतिक पार्टी बिलकुल सही है।

मैं भी सैनिकों की बहादुरी वाली फ़िल्में देखता था और तालियाँ बजाता था। मैं भी पाकिस्तान से नफ़रत करता था।

लेकिन फिर मुझे आदिवासी इलाके में जाकर रहने का मौका मिला। मैंने वहाँ जाकर अनुभव किया कि मेरी धारणाएं काफी अधूरी हैं।

मैंने दलितों की जली हुई बस्तियों का दौरा किया और मुझे समझ में आया कि मेरे धर्म में बहुत सारी गलत बातें हैं।

धीरे धीरे मैंने ध्यान दिया कि सभी धर्मों में गलत बातें हैं

लेकिन कोई भी धर्म वाला उन गलत बातों को स्वीकार करने और सुधारने के लिए तैयार नहीं है।

इस तरह मुझे धर्म की कट्टरता समझ में आयी। इसके बाद मैंने अपनी कट्टरता छोड़ने का फैसला किया। मैंने यह भी फैसला किया कि अब मैं किसी भी धर्म को अपना नहीं मानूंगा क्योंकि सभी धर्म एक जैसी मूर्खता और कट्टरता से भरे हुए हैं।

आदिवासियों के बीच रहते हुए मैंने पुलिस की ज्यादतियां देखीं। मैंने उन् आदिवासी लड़कियों की मदद करी जिनके साथ पुलिस वालों और सुरक्षा बलों के जवानों नें सामूहिक बलात्कार किये थे। मैंने उन माओं को अपने घर में पनाह दी जिनके बेटों और पति को सुरक्षा बलों नें मार डाला था

ताकि उनकी ज़मीनों को उद्योगपतियों को दिया जा सके।

मैंने आदिवासियों के उन गाँव में रातें गुजारीं जिन गाँव को सुरक्षा बलों नें जला दिया था। उन् जले हुए घरों में बैठ करे मैंने खुद से सवाल पूछे कि आखिर इन निर्दोष आदिवासियों के मकान क्यों जलाये गए? घर जलने से किसका फायदा होगा? घर जलाने वाला कौन है?

वहाँ मुझे समझ में आया
कि हम जो शहरों में मजे से बैठ कर बिजली जलाते हैं,
शॉपिंग मॉल में कार में बैठ कर जाते हैं,
हम जो बारह सौ रूपये का पीज़ा खाते हैं,

वह सब ऐशो आराम तभी संभव है

जब इन आदिवासियों की ज़मीनों पर उद्योगपतियों का कब्ज़ा हो।

उद्योग लगेंगे तो हम शहरी पढ़े लिखे लोगों को नौकरी मिलेगी। हमारे विकास के लिए इन आदिवासियों की ज़मीनों पर कब्ज़ तो पुलिस और सुरक्षा बलों के जवान ही करेंगे। आदिवासी अपनी ज़मीन नहीं छोडना चाहता इसलिए हमारे सिपाही आदिवासी का घर जलाते हैं।

हम शहरी लोग इसीलिये इन सिपाहियों के गुण गाते हैं,

इसीलिये आदिवासी मरता है या उसके साथ बलात्कार होता है या उसका घर जलता है तो हमें बिलकुल भी बुरा नहीं लगता। लेकिन सिपाही के साथ कुछ भी होने पर

हम गाली गलौज करने लगते हैं।

आदिवासियों के जले हुए गाँव में बैठ कर मुझे भारतीय मिडिल क्लास की पूरी राजनीति समझ में आ गई।

मुझे राजनीति विज्ञान भारतीय लोकतंत्र और न्याय व्यवस्था के अध्यन के लिए किसी विश्वविद्यालय में नहीं जाना पड़ा।

वो मैंने खुद अनुभव से सीखा।

मुझे कश्मीरी दोस्तों से भी मिलने का मौका मिला।

मैंने उनके परिवार के साथ भारतीय सेना और अर्ध सैनिक बलों के ज़ुल्मों के बारे में जाना। चूंकि तब तक मैं समझ चुका था कि सरकारी फौजें किस तरह से ज़ुल्म करती हैं,

इसलिए कश्मीरी जनता पर भारतीय सिपाहियों के ज़ुल्मों को मैं साफ़ दिल से समझ पाया।

कश्मीर में सेना नें घरों से जिन नौजवानों को उठा कर मार डाला था, मैं उन बच्चों की माओं से मिला। जिन पुरुषों को सेना नें घरों से उठा लिया और कई सालों तक जिनका फिर कुछ पता नहीं चला उनकी पत्नियों से मिला।

उन औरतों को कश्मीर में हाफ विडो कहा जाता है

यानी आधी विधवा। मैंने उन महिलाओं के बारे में भी जाना जिनके साथ हमारी सेना के सैनिकों नें बलात्कार किये।

मैंने मुज़फ्फर नगर दंगों के बाद वहाँ रह कर काम किया।

वहाँ एक फर्जी प्रचार के बाद दंगे कराए।

मैंने उस फर्जी प्रचार की पूरी सच्चाई की खोज करी,

दंगा अमित शाह ने करवाया था। इन दंगों में एक लाख गरीब मुसलमान बेघर हो गए थे। सर्दी में उन्हें खुले में तम्बुओं में रहना पड़ रहा था। वहाँ ठण्ड से साठ से भी ज़्यादा बच्चों की मौत हो गयी थी।

इस तरह मैंने देखा कि लव जिहाद के नाम पर

भाजपा नें हिदुओं में असुरक्षा की भावना भड़काई

और उत्तर प्रदेश में भाजपा के लिए सीटें जीतीं।

मेरी बेचैनी बढ़ती गयी। मुझे लगने लगा कि हम शहरी लोग इतने स्वार्थी कैसे हो सकते हैं कि हमारे फायदे के लिए करोड़ों आदिवासियों पर ज़ुल्म किये जाएँ। हम इतने स्वार्थी कैसे हो सकते हैं कि दलितों की बस्तियां जलाई जाएँ और हम क्रिकेट देखते रहें। कश्मीर में हमारी सेना ज़ुल्म करे और हम उसका समर्थन करें।

तभी भाजपा का शासन आ गया। मैंने देखा कि अब दलितों पर अत्याचार करने वाले और भी ताकतवर हो गए हैं। कश्मीर के ऊपर आवाज़ उठाने के कारण दलित विद्यार्थियों को हास्टल से निकाला जा रहा है। इसके बाद इन्हीं छात्रों में से एक छात्र रोहित वेमुला ने आत्महत्या कर ली। मुझे लगा यह आत्म हत्या नहीं एक तरह की हत्या ही है।

साथ साथ सोनी सोरी नाम की आदिवासी महिला के ऊपर सरकार के अत्याचार बढते जा रहे थे। मैं बेचैन था कि आखिर इन मुद्दों पर कोई ध्यान क्यों नहीं देता। तभी सरकार में बैठे लोगों नें भारत माता का शगूफा छोड़ दिया।

मुझे लगा कि भारत माता की जय बोलना तो कोई मुद्दा है ही नहीं, यह तो असली समस्याओं से ध्यान भटकाने के लिए सरकारी चालाकी है। मैंने निश्चय किया कि मैं भारत माता की जय नहीं बोलूँगा।

जैसे मैं अब किसी भगवान की पूजा नहीं करता लेकिन इंसानों के भले के लिए काम करने की कोशिश करता हूँ।

इसी तरह मैं भाजपा के कहने से भारत माता की जय बिलकुल नहीं कहूँगा, अलबत्ता मैं देश के लोगों की सेवा पहले की तरह करता रहूँगा।

इस समय भारत माता की जय को लोगों को बेवकूफ बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है,

और मैंने बेवकूफ बनने से इनकार कर दिया है।

- हिमांशु कुमार

युवक क्या कर सकते हैं, यह समझिये

हरिशंकर परसाई

युवक पहले स्वयं शिक्षित हों फिर लोगों को शिक्षित करें । शिक्षा से मतलब उस शिक्षा से नहीं है जो दी जा रही है । सही शिक्षा । इतिहास की सही समझ होनी चाहियें। मध्ययुग के इतिहास की गलत समझ सांप्रदायिक द्वेष का मूल कारण है । यह इतिहास मुझे भी गलत पढ़ाया गया था और आप युवकों को भी गलत पढ़ाया जाता है। मुसलमान भारत में लूटपाट करने या राज्य जीतने के लिए आते थे । इस्लाम का नाम वे उत्तेजित करने के लिए लेते थे । मेहमूद नवी सोमनाथ का खजाना लूटने आया था, इस्लाम के लिए नहीं। उसकी सेना में हिन्दू बहुत थे। रास्ता बतलाने वाले भी हिन्दू थे। जितने हमलावर आये, उन सबकी सेना में बहुत से सिपाही भारत में भर्ती होते थे। सिपाही अच्छी नौकरी करना चाहते थे, चाहे वह हिन्दू राजा की हो या मुसलमान राजा की । शिवाजी के सेनाध्यक्ष मुसलमान थे और प्रतापसिंह के हिन्दू । अकबर के सेनापति मानसिंह थे और औरंगजेब के सेनापति जयसिंह। बाबर की पानीपत में लड़ाई इब्राहिम लोदी से हुई जो मुसलमान था । राज्य और पैसे के मामले में ना मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई थे, ना हिन्दू-हिन्दू भाई-भाई। औरंगजेब की ज्यादा लड़ाई मुसलमानों से हुई थी ।

पहले जो आये वे लुटेरे थे । मुगल यहाँ रहने आये थे। बाबर लौटकर वतन नहीं गया। मुगल लोगों की सभ्यता और संस्कृति उन्नत थी । इन्हें शकों और हूणों जैसी बर्बर जातियों की तरह भारतीय समाज पचा नहीं सकता था । ये ताजमहल बनाने वाले लोग थे। इनके साथ संस्कृति का समन्वय ही हो सकता था और वह हुआ ।

हिन्दू से मुसलमान तलवार की धार से नहीं बने। कारीगर मुसलमान बने और नीची जाति के लोग स्वेच्छा से बने । वे हिन्दू समाज में अछूत थे, अपमानित होते थे और अत्याचार के शिकार थे । उन्हें इस्लाम में बराबरी का दर्जा मिला । बहुदेववाद से छूटकर एकेश्वरवाद मिला ।

मंदिर लूटने का मुहकमा मुसलमान राजाओं के यहाँ नहीं था। हिन्दू राजाओं के शासन में बाकायदा मंदिर लूटने का मुहकमा था। यह रिकॉर्ड है । मंदिर धर्म के कारण नहीं, धन के कारण लूटे जाते थे। सबसे ज्यादा मंदिर राजा हर्ष ने लूटे। मुसलमान राजा भी मंदिर धन के लिए ही लूटते थे पर औरंगजेब काशी के विश्वनाथ मंदिर तथा उज्जैन के महाकाल मंदिर को धन देता था ।

मध्ययुग के काव्य में कहीं हिन्दू-मुस्लिम द्वेष नहीं है, समन्वय है । मुसलमान कवियों ने कृष्ण पर काव्य लिखा है । कबीरदास ने हिन्दू-मुसलमान दोनों को ही पाखण्ड के लिए लताड़ा है पर यह नहीं कहा कि तुम भाई-भाई हो और आपस में मत लड़ो। इसकी जरुरत ही नहीं थी।

विस्तार से लिखा नहीं जा सकता । मेरा मतलब इतिहास को ठीक से पढ़े, समझें । जाति प्रथा खत्म करें । मंदिर और मस्जिद के लिए न लड़े । सांप्रदायिक राजनीति के चक्कर में ना आएँ । द्वेष को खत्म करें । युवक जनता को शिक्षित करें ।